शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

सम्पादकीय

डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

सम्पादकीय

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की पहल पर विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों द्वारा किए जा रहे शोध संगोष्ठियों एवं शोध प्रकाशन की प्राथमिकताओं से उच्चशिक्षा में शोध के प्रति उत्साहजनक और सकरात्मक प्रयास शुरू हुए हं। स्वातंत्र्योत्तर भारत में विकास के कार्यों में लगाने के किए मानव संसाधान की व्यापक आवश्यकता महसूस की गयी। फलत: देश में शिक्षा विभाग को मानव संसाधन विभाग के अंतर्गत रखा-गया। स्वतंत्र भारत की प्राथमिकता अशिक्षा से मुक्ति हेतु व्यापक अभियान चलाकर जनता को शिक्षित करने की थी और इसके साथ भारत में राज्य के समक्ष महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी विकास की थी। विकास के लिए जनता का मन बनाना और इसकी आवश्यकता के अनुसार मानव संसाधन का निर्माण करना, देश के विकास की पूर्वापेक्षा थी। परिणामस्वरूप देश में व्यावसायिक शिक्षा का चलन शुरू हुआ, रोजगारपरक शिक्षा क नये-नये पाठ्यक्रम आविष्कृत हुए और चिकित्सा एवं आभियान्त्रिकी की नयी-नयी शाखाओं का प्रार्दुभाव हुआ। इस लक्ष्योदेश्य को फलीभूत करने में प्राकृतिक विज्ञान के विषयों की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। विकास और विज्ञान के पारस्परिक सहयोग से निर्मित इस नए माहौल में मानविकी एवं समाज विज्ञान के विषयों की उपेक्षा स्वाभाविक थी। यद्यपि अपनी महत्ता प्रतिपादित करने के होड़ में इन विषयों में अधिकांश ने अपनी विज्ञान से परस्परिकता का सूत्र ढूढ़ना प्रारम्भ किया। यह एक सामान्य प्रश्न लगभग सभी शैक्षिक अनुशासनों में प्रारंभ हुआ कि वह कला है या विज्ञान। इन शैक्षिक विषयों में विज्ञान और विज्ञानेतर विषयों का विभाजन सामान्य हुआ। अगले चरणों में भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक अन्य विभाजन रोजगारपरकता को लेकर हुआ। सम्प्रति उच्च शिक्षा में एक विभाजन स्पष्ट दिखता है, एक तरफ पारंपरिक विषयों की शिक्षा है तो दूसरी ओर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की शिक्षा है। पारंपरिक विषयों की महत्ता शिक्षा के मौलिक चिंतन एवं मौलिक शोध (Fundamental Research) की दृष्टि से है, वहीं दूसरी ओर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की शिक्षा में मानव संसाधन का सृजन, रोजगार एवं अनुप्रयुक्त शोध (Applied Research) का महत्त्व है। पूर्व में शिक्षा व्यवस्था का दायित्व केवल शिक्षा प्रदान करना था। इस समय उच्च शिक्षा संस्थान एवं विश्वविद्यालयों पर शोध कार्य को आगे बढ़ाने की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी आ चुकी है।

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की ओर एक बड़े वर्ग के आकर्षण के कारण सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी के विषयों के प्रति उपेक्षा की भावना महसूस की जा रही थी। इधर के वर्षों में भारतीय विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की उपस्थिति एक बड़ी चिंता का विषय रहा है। इससे अध्यापक वर्ग के लिए अपने उत्तरदायित्व एवं प्रतिभा को निष्पादित (Perform) करने का अवसर दुर्लभ होने लगा। दूसरी ओर विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के गैर रचनात्मक उपस्थिति का दबाव एक प्रकार से कुंठा का वातारण निर्मित करने लगा। मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों को उपादेयता उन अर्थों में नहीं है जैसा कि व्यावसायिक विषयों का है। अतएव मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान के विषय समाज में उपेक्षित होने लगे और शासन का भी ध्यान इन विषयों और उच्चशिक्षा से हटने लगा। प्राय: यह चर्चा सत्ता के गलियारे में आम हो गयी कि उच्च शिक्षा पर व्यय अनुत्पादक है। नागरिकता की समझ, उच्च जीवन मूल्य एवं मनुष्य के सर्वांगीण उन्नति के लिए इन विषयों की अपरिहार्यता असंदिग्ध है। शोध के संदर्भ में यह महत्त्वपूर्ण है कि मौलिक शोध वस्तुत: मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों की मुख्य धारा से जुड़े हैं। प्राकृतिक विज्ञान के अनुप्रयुक्त शोध से चाहे हम जितनी भी भौतिक प्रगति कर लें और मानविकीय सामाजिक विज्ञानों के अनुप्रयुक्त शोधों, सर्वेक्षणों से चाहे हम जितनी भी प्रबन्धकीय कुशलताओं एवं सफलताओं को प्राप्त कर लें, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी के मौलिक शोधों का महत्त्व यथावत् बना रहेगा।

सूचना प्रौद्योगिकी एवं वैश्वीकरण ने दुनिया के ज्ञान तंत्र का लोकतांत्रीकरण कर दिया अब सभी भाषाओं एवं देश में बद्ध ज्ञान सर्वसुलभ हो गया है। सभी भाषाओं का साहित्य दश-काल से परे जाकर विश्व साहित्य बनना चाहता है। चारो तरफ आज ज्ञान के क्षितिज पर उन बातों की चर्चा है जो विश्व साहित्य की संकल्पना

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

सम्पादकीय

डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

को बल दे सकता है। दुनिया के समग्र भाषाओं में आबद्ध ज्ञान अब सार्वदेशिक सामान्य ज्ञान बनना चाहता है। ज्ञान की इस साझेदारी में अन्तरनुशासनात्मक शोध का महत्त्व नि:संदेह बढ़ा है। बिना शोध के हम विश्व साहित्य के निर्माण में अपना योगदान नहीं कर सकते हैं। अब देश-विदेश के भाषा साहित्य एवं वाङ्गमय की सीमा महत्त्वपूर्ण नहीं रही। सम्प्रति पत्र-पत्रिकाओं एवं संगोष्ठियों से ऐसा सकारात्मक वातावरण निर्मित हुआ है। अत: आवश्यकता है कि अपनी भाषा साहित्य और वाङ्गमय में उच्च मौलिक शोधों से विश्व साहित्य में अहम् उपस्थिति दर्ज की जाये। अनुवाद और शोध, दो ऐसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं, जिनमें मौलिक योगदान के माध्यम से भारतीय भाषा-साहित्य एवं वाङ्गमय की महत्त्वपूण उपलब्धियों को पूरी दुनिया में विस्तारित किया जा सकता है तथा वैश्विक अनुभवों से इनको जोड़ते हुए विश्व साहित्य में भारतीय भाषा-साहित्य एवं ज्ञान की महत्ता को प्रतिपादित किया जा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी जनित सुविधाओं ने एक तरफ हमारे ज्ञान का सूचनात्मक विस्तार किया है तो दूसरी ओर इन सूचनाओं के प्रसंस्करण से नवीन तथ्यों को अन्वेषित करने हमें समर्थ बनाया है। सामाजिक-मानविकीय शोधों के लिए इससे व्यापक संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त हुआ है। नवीन परिस्थिति को समझते हुए, सूचना प्रौद्योगिकी के नवाचारों (New Innovations)को अपनाते हुए एक तरफ हमें अपने ज्ञान तंत्र की खिड़की को खुला रखना होगा और दूसरी तरफ बाहर से आने वाली हवाओं के प्रति सचेत और सतर्क रहना होगा जिससे नव्यतम अवधारणायें और तथ्य समाज की प्रबुद्ध चेतना को प्रौढ़ करते हुए मानवीय चेतना का विकास कर सके।

योगेन्द्र प्रताप सिंह

(प्रधान संपादक)

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN